© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 05 | October - December 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : Dec 2018

# जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रतीकवाद का विकास

**डॉ. राम अधार सिंह यादव**
Associate Professor, Department of Hindi
S.M. College Chandausi, Sambhal (U.P.)

**सार**

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि और नाटककारों में से एक थे, जिनकी रचनाओं में प्रतीकवाद का विशेष स्थान है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य जयशंकर प्रसाद की काव्य में प्रतीकवाद के विकास और उसकी महत्वपूर्णता को समझना है। प्रतीकवाद का अध्ययन करते हुए यह शोध पत्र उनके प्रमुख काव्य संग्रहों जैसे 'कामायनी', 'झरना', और 'आंसू' में प्रयुक्त प्रतीकों की गहन विवेचना करता है। प्रसाद की काव्य में प्रतीकवाद केवल सौंदर्यशास्त्र की दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह उनके दार्शनिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण को भी स्पष्ट करता है। उनके द्वारा प्रयुक्त प्रतीक, जैसे जल, पर्वत, सूर्य, और चंद्रमा, न केवल प्राकृतिक तत्वों का चित्रण करते हैं, बल्कि मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं और मनोवृत्तियों को भी दर्शाते हैं। इस शोध पत्र में प्रतीकवाद के विकास को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में भी समझने का प्रयास किया गया है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि कैसे जयशंकर प्रसाद ने भारतीय साहित्यिक परंपरा में प्रतीकवाद को नया आयाम दिया। इसके अतिरिक्त, प्रसाद की काव्य रचनाओं में प्रतीकवाद की प्रभावशीलता और उसके पाठकों पर पड़ने वाले प्रभाव का भी विश्लेषण किया गया है।

**मुख्य शब्द:** जयशंकर प्रसाद, प्रतीकवाद, हिंदी साहित्य, काव्य, कामायनी

## परिचय

प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा काशी में क्वींस कालेज में हुई थी, परंतु यह शिक्षा अल्पकालिक थी। छठे दर्जे में वहाँ शिक्षा आरंभ हुई थी और सातवें दर्जे तक ही वे वहाँ पढ़ पाये। उनकी शिक्षा का व्यापक प्रबंध घर पर ही किया गया, जहाँ हिन्दी और संस्कृत का अध्ययन इन्होंने किया। प्रसाद जी के प्रारंभिक शिक्षक श्री मोहिनीलाल गुप्त थे। वे कवि थे और उनका उपनाम 'रसमय सिद्ध' था। शिक्षक के रूप में वे बहुत प्रसिद्ध थे। चेतगंज के प्राचीन दलहट्टा मोहल्ले में उनकी अपनी छोटी सी बाल पाठशाला थी। 'रसमय सिद्ध' जी ने प्रसाद जी को प्रारंभिक शिक्षा दी तथा हिंदी और संस्कृत में अच्छी प्रगति करा दी। प्रसाद जी ने संस्कृत की गहन शिक्षा प्राप्त की थी। उनके निकट संपर्क में रहने वाले तीन सुधी व्यक्तियों के द्वारा तीन संस्कृत अध्यापकों के नाम मिलते हैं। डॉ॰ राजेन्द्रनारायण शर्मा के अनुसार "चेतगंज के तेलियाने की पतली गली में इटावा के एक उद्भट विद्वान रहते थे। संस्कृत–साहित्य

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 05 | October - December 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : Dec 2018

के उस दुर्धर्ष मनीषी का नाम था – गोपाल बाबा। प्रसाद जी को संस्कृत साहित्य पढ़ाने के लिए उन्हें ही चुना गया।" विनोदशंकर व्यास के अनुसार "श्री दीनबन्धु ब्रह्मचारी उन्हें संस्कृत और उपनिषद् पढ़ाते थे।" राय कृष्णदास के अनुसार रसमय सिद्ध से शिक्षा पाने के बाद प्रसाद जी ने एक विद्वान् हरिहर महाराज से और संस्कृत पढ़ी। वे लहुराबीर मुहल्ले के आस–पास रहते थे। प्रसाद जी का संस्कृत प्रेम बढ़ता गया। उन्होंने स्वयमेव उसका बहुत अच्छा अभ्यास कर लिया था। बाद में वे स्वाध्याय से ही वैदिक संस्कृत में भी निष्णात हो गये थे।" बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत–अध्यापक महामहोपाध्याय पं॰ देवीप्रसाद शुक्ल कवि–चक्रवर्ती को प्रसाद जी का काव्यगुरु माना जाता है।

प्रसाद जी का पहला विवाह 1909 ई॰ में विंध्यवासिनी देवी के साथ हुआ था। उनकी पत्नी को क्षय रोग था। सन् 1916 ई॰ में विंध्यवासिनी देवी का निधन हो गया। उसी समय से उनके घर में क्षय रोग के कीटाणु प्रवेश कर गये थे। सन् 1917 ई॰ में सरस्वती देवी के साथ उनका दूसरा विवाह हुआ। दूसरा विवाह होने पर उनकी पहली पत्नी की साड़ियों आदि को उनकी द्वितीय पत्नी ने भी पहना और कुछ समय बाद उन्हें भी क्षय रोग हो गया और दो ही वर्ष बाद 1919 ई॰ में उनका देहांत भी प्रसूतावस्था में क्षय रोग से ही हुआ। इसके बाद पुनः घर बसाने की उनकी लालसा नहीं थी, परंतु अनेक लोगों के समझाने और सबसे अधिक अपनी भाभी के प्रतिदिन के शोकमय जीवन को सुलझाने के लिए उन्हें बाध्य होकर विवाह करना पड़ा। सन् 1919 ई॰ में उनका तीसरा विवाह कमला देवी के साथ हुआ। उनका एकमात्र पुत्र रत्नशंकर प्रसाद तीसरी पत्नी की ही संतान थे, जिनका जन्म सन् 1922 ई॰ में हुआ था। स्वयं प्रसाद जी भी जीवन के अंत में क्षय रोग से ग्रस्त हो गये थे और एलोपैथिक के अतिरिक्त लंबे समय तक होमियोपैथिक तथा कुछ समय आयुर्वेदिक चिकित्सा का सहारा लेने के बावजूद इस रोग से मुक्त न हो सके और अंततः इसी रोग से 15 नवम्बर 1937 (दिन–सोमवार) को प्रातःकाल (उम्र 47) उनका देहान्त काशी में हुआ। सुप्रसिद्ध युवा कवि गोलेन्द्र पटेल ने अपनी कविता 'कठौती और करघा' में काशी के संदर्भ में कहा है कि "रैदास की कठौती और कबीर के करघे के बीच/ तुलसी का दुख एक सेतु की तरह है/ जिस पर से गुज़रने पर/ हमें प्रसाद, प्रेमचंद व धूमिल आदि के दर्शन होते हैं!

**लेखन–कार्य**

**कविता**

प्रसाद ने कविता ब्रजभाषा में आरम्भ की थी। उपलब्ध स्रोतों के आधार पर प्रसाद जी की पहली रचना 1901 ई॰ में लिखा गया एक सवैया छंद है, लेकिन उनकी प्रथम प्रकाशित कविता दूसरी है, जिसका प्रकाशन जुलाई 1906 में 'भारतेन्दु' में हुआ था। प्रसाद जी ने जब लिखना शुरू किया उस समय भारतेन्दुयुगीन और द्विवेदीयुगीन काव्य–परंपराओं के अलावा श्रीधर पाठक की 'नयी चाल की कविताएँ भी थीं। उनके द्वारा किये गये अनुवादों 'एकान्तवासी योगी' और 'ऊजड़ग्राम' का नवशिक्षितों और पढ़े–

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 05 | October - December 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : Dec 2018

लिखे प्रभु वर्ग में काफी मान था। प्रसाद के 'चित्राधार' में संकलित रचनाओं में इसके प्रभाव खोजे भी गये हैं और प्रमाणित भी किये जा सकते हैं।

1909 ई॰ में 'इन्दु' में उनका कविता संग्रह 'प्रेम–पथिक' प्रकाशित हुआ था। 'प्रेम–पथिक' पहले ब्रजभाषा में प्रकाशित हुआ था। बाद में इसका परिमार्जित और परिवर्धित संस्करण खड़ी बोली में नवंबर 1914 में 'प्रेम–पथ' नाम से और उसका अवशिष्ट अंश दिसंबर 1914 में 'चमेली' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। बाद में एकत्रित रूप से यह कविता 'प्रेम–पथिक' नाम से प्रसिद्ध हुई। डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र के अनुसार :''प्रेम–पथिक' का महत्त्व प्रसाद की व्यापक और उदार दृष्टि, सर्वभूत हित कामना, समता की इच्छा, प्रतिपद कल्याण करने का संकल्प, प्रकृति की गोद में सुख का स्वप्न आदि के **बीजभाव** के कारण तो है ही, प्रसाद ने प्रेम के अनुभूतिपरक अनेक रूपों का जो वर्णन किया है उसके कारण भी है।"

'करुणालय' का प्रकाशन 1913 ई॰ में 'इन्दु' में हुआ था। स्वयं प्रसाद जी ने इसे गीतिनाट्य के ढंग पर लिखा गया दृश्य काव्य कहा है। हालाँकि इसकी रचना गीतिपरक न होकर कवितात्मक ही है। केवल इसके अंत में एक गीतात्मक पद्य है। कविता का अधिकांश अतुकान्त है तथा मात्रिक छंद में वाक्यानुसार विरामचिह्न दिया गया है। इसलिए इसे गीतिनाट्य की अपेक्षा 'काव्य नाटक' कहना ही उचित है। 1914 ई॰ में 'इन्दु' में प्रकाशित 'महाराणा का महत्त्व' शीर्षक कविता महाराणा प्रताप के साथ अमर सिंह पर भी केन्द्रित है। यह स्वाधीनता प्रेम, पराधीनता के खिलाफ संघर्ष, स्वतंत्रता को हर कीमत पर बनाये रखने के शौर्य और संकल्प की कथात्मक कविता है।

प्रसाद जी की प्रारम्भिक रचनाओं का संग्रह 'चित्राधार' था, जिसका पहला संस्करण **1918** ई॰ में प्रकाशित हुआ था; परंतु उनका पहला प्रकाशित काव्य–संग्रह 'कानन–कुसुम' था जिसका प्रथम प्रकाशन 1913 ई॰ में हुआ था। इसके तीसरे संस्करण के विवरण से पता चलता है कि इसके प्रथम संस्करण में उस समय तक रचित प्रसाद जी की खड़ीबोली के साथ ब्रजभाषा की कविताएँ भी संकलित थीं। बाद के संस्करण में इसमें केवल खड़ीबोली की कविताएँ रखी गयीं तथा ब्रजभाषा में रचित कविताएँ 'चित्राधार' में संकलित कर दी गयीं। चूँकि 'चित्राधार' में संकलित रचनाएँ कालक्रम से 'कानन–कुसुम' में संकलित रचनाओं से पहले की थीं, इसलिए प्रसाद जी की कृतियों में 'चित्राधार' को पहले और 'कानन–कुसुम' को दूसरे काव्य–संग्रह के रूप में स्थान दिया जाता है। 'कानन–कुसुम' की रचनाओं में संशोधन–परिवर्धन भी बहुत बाद तक होते रहा।

**प्रकाशित कृतियाँ**

**काव्य**

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 05 | October - December 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : Dec 2018

1. प्रेम–पथिक – 1909 ई॰ (प्रथम संस्करण ब्रजभाषा में; संशोधित–परिवर्धित संस्करण खड़ी बोली में – 1914)
2. करुणालय (काव्य–नाटक) – 1913 ई॰ (`चित्राधार` के प्रथम संस्करण में `करुणालय` संकलित थी, परंतु 1928 में इन दोनों का स्वतंत्र प्रकाशन हुआ।)
3. महाराणा का महत्त्व – 1914ई॰ (यह भी `चित्राधार` के प्रथम संस्करण में करुणालय के साथ ही संकलित थी, परंतु 1928 में इसका भी स्वतंत्र प्रकाशन हुआ।)
4. चित्राधार – 1918 ई॰ (संशोधित–परिमार्जित संस्करण – 1928 ई॰)
5. कानन कुसुम – 1913 ई॰ (ब्रजभाषा मिश्रित प्रथम संस्करण–1913 ई॰; परिवर्धित संस्करण–1918 ई॰; संशोधित–परिमार्जित, खड़ीबोली संस्करण–1929 ई॰)
6. झरना – 1918 ई॰ (परिवर्धित संस्करण–**1927** ई॰)
7. आँसू – 1925 ई॰ (परिवर्धित संस्करण–1933 ई॰)
8. लहर– 1935 ई॰
9. कामायनी – 1936 ई॰

**कहानी–संग्रह एवं उपन्यास**

1. छाया – 1912 ई॰
2. प्रतिध्वनि – 1926 ई॰
3. आकाशदीप – 1929 ई॰
4. आँधी – 1931 ई॰
5. इन्द्रजाल – 1936 ई॰

**उपन्यास–**

1. कंकाल – 1929 ई॰
2. तितली – 1934 ई॰
3. इरावती – 1938 ई॰

**नाटक–एकांकी एवं निबन्ध**[संपादित करें]

1. उर्वशी (चम्पू) – 1909 ई॰

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 05 | October - December 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : Dec 2018

2. सज्जन – 1910 ई॰
3. कल्याणी परिणय – 1912 ई॰ (नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित; 1931 ई॰ में कुछ संशोधनों के साथ 'चन्द्रगुप्त' नाटक में समायोजित।)[59]
4. प्रायश्चित्त – 1914 ई॰
5. राज्यश्री – 1915 ई॰
6. विशाख – 1921 ई॰
7. अजातशत्रु – 1922 ई॰
8. जनमेजय का नाग–यज्ञ – 1926 ई॰
9. कामना – 1927 ई॰
10. स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य – 1928ई॰
11. एक घूँट – 1930 ई॰
12. चन्द्रगुप्त – 1931 ई॰
13. ध्रुवस्वामिनी – 1933 ई॰
14. अग्निमित्र (अपूर्ण)

**निबन्ध–**

1. काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध – 1939 (भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित।)

**रचना–समग्र**

1. **जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली** (चार खण्डों में) [संपादन एवं भूमिका– डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र; लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज से प्रकाशित। चारों खण्ड अलग–अलग **प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी, प्रसाद के सम्पूर्ण उपन्यास** तथा **प्रसाद की सम्पूर्ण कहानियाँ एवं निबन्ध** के नाम से भी सजिल्द एवं पेपरबैक में उपलब्ध।]
2. **जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली** (सात खण्डों में) – 2014 ई॰ (सं॰ ओमप्रकाश सिंह; प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली से प्रकाशित। इसके द्वितीय खण्ड में समुचित शोध से प्राप्त, दो अधूरी कविताएँ सहित पूर्व में असंकलित कुल पैंतीस कविताओं को पहली बार संकलित किया गया है। सभी खण्डों में संकलित रचनाओं के प्रथम प्रकाशन का विवरण

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 05 | October - December 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : Dec 2018

दिया गया है। सप्तम खण्ड में 'आँसू' का प्रथम संस्करण भी संकलित किया गया है। इसके अतिरिक्त ५ व्यक्तियों के नाम लिखे गये ४६ पत्र, कई चित्र एवं हस्तलेख तथा कुछ अन्य सामग्री भी दी गयी हैं।)

**निष्कर्ष**

जयशंकर प्रसाद की काव्य में प्रतीकवाद का विकास उनके साहित्यिक योगदान का एक महत्वपूर्ण और अद्वितीय पहलू है। उनके काव्य में प्रयुक्त प्रतीक केवल साहित्यिक उपकरण नहीं हैं, बल्कि गहरे दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों के वाहक भी हैं। प्रसाद की रचनाओं में जल, पर्वत, सूर्य, और चंद्रमा जैसे प्रतीक न केवल प्राकृतिक तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि मानव जीवन की विविधताओं और मनोवृत्तियों को भी प्रतिबिंबित करते हैं। प्रसाद ने प्रतीकवाद को अपनी कविताओं में इस प्रकार समाहित किया है कि वे पाठकों के मस्तिष्क और हृदय दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं। उनके प्रतीकवादी दृष्टिकोण ने हिंदी काव्य साहित्य को एक नई दिशा दी, जिसमें व्यक्तिगत और सार्वभौमिक अनुभवों का संगम होता है। यह प्रतीकवाद केवल प्रसाद के व्यक्तिगत साहित्यिक विकास का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर भी है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्रसाद के काव्य में प्रतीकवाद का विकास न केवल उनके रचनात्मक कौशल का परिणाम है, बल्कि यह भारतीय साहित्यिक परंपरा में एक महत्वपूर्ण योगदान भी है। प्रसाद के प्रतीक उनकी काव्य की आत्मा हैं, जो उनके साहित्य को अद्वितीय और समयातीत गुणवत्ता प्रदान करते हैं।

अंततः, जयशंकर प्रसाद की काव्य में प्रतीकवाद का विकास हिंदी साहित्य के छात्रों और विद्वानों के लिए अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो साहित्यिक सौंदर्यशास्त्र, दार्शनिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोणों को समझने में सहायक सिद्ध होता है। उनके प्रतीकवादी दृष्टिकोण ने हिंदी काव्य को एक नई ऊँचाई दी है और यह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

**सन्दर्भ**

1. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास, भाग–10, सम्पादक– डॉ नागेन्द्र एवं अन्य, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, संस्करण 1971, पृष्ठ 145.
2. अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद', सं०–पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण–2001ई०,पृ०–2
3. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, भाग–१०, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी; संस्करण–२०२८ वि० (=१९७१ई०), पृ०–१४५(तारीख एवं ईस्वी के लिए)।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 05 | October - December 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Published : Dec 2018

4. डॉ॰ राजेन्द्रनारायण शर्मा, *अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'* , सं॰ पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण–२००१ ई॰,पृ॰ १२.

5. राय कृष्णदास, *अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'* , सं॰ पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण–२००१ ई॰, पृ॰ ३०.

6. डॉ॰ राजेन्द्रनारायण शर्मा, *अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'* , सं॰ पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण–२००१ ई॰,पृ॰ ११.

7. *शिवपूजन रचनावली*, चौथा खण्ड, श्री शिवपूजन सहाय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, संस्करण–१९५९, पृष्ठ–४१२–४१३.

8. डॉ॰ प्रेमशंकर, *प्रसाद का काव्य*, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–1998, पृष्ठ–29.

9. डॉ॰ राजेन्द्रनारायण शर्मा, *अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'* , सं॰ पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; संस्करण–२००१ ई॰,पृ॰ १६–१७.